Q No 01 विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में विश्व बैंक (IBRD) की भूमिका एवं कार्यों का परीक्षण करें |

विश्व बैंक (World Bank) विश्व की सबसे महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में से एक है। इसका प्रमुख अंग अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (International Bank for Reconstruction and Development – IBRD) है। इसकी स्थापना 1944 में अमेरिका के ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में हुई तथा 1946 से इसने अपना कार्य प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में इसका उद्देश्य द्वितीय विश्व युद्ध से प्रभावित देशों के पुनर्निर्माण में सहायता करना था, लेकिन बाद में इसका मुख्य लक्ष्य विकासशील एवं मध्यम आय वाले देशों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास को बढ़ावा देना बन गया।

आज IBRD का प्रमुख उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, सतत विकास, आर्थिक वृद्धि, रोजगार सृजन, आधारभूत संरचना का विकास, मानव संसाधन विकास तथा जीवन स्तर में सुधार करना है। यह सदस्य देशों को दीर्घकालीन ऋण, तकनीकी सहायता, नीतिगत परामर्श तथा विकास परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहयोग प्रदान करता है।

विश्व बैंक (IBRD) के उद्देश्य

- विकासशील देशों के आर्थिक विकास को गति देना।
- गरीबी एवं बेरोजगारी को कम करना।
- आधारभूत संरचना का निर्माण एवं आधुनिकीकरण करना।
- शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मानव संसाधन का विकास करना।
- कृषि एवं ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना।
- निजी एवं विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करना।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का विस्तार करना।
- पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास को बढ़ावा देना।
- आर्थिक एवं वित्तीय स्थिरता बनाए रखना।
- सदस्य देशों के बीच आर्थिक सहयोग एवं विकास को प्रोत्साहित करना।

विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में विश्व बैंक (IBRD) की भूमिका

1. आर्थिक विकास में योगदान

विश्व बैंक विकासशील देशों को दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराकर औद्योगिक विकास, उत्पादन वृद्धि, रोजगार सृजन तथा राष्ट्रीय आय बढ़ाने में सहायता करता है। इससे आर्थिक विकास की गति तेज होती है तथा देशों की विकास क्षमता बढ़ती है।

2. आधारभूत संरचना (Infrastructure) का विकास

विश्व बैंक सड़क, रेलवे, पुल, बंदरगाह, हवाई अड्डे, विद्युत उत्पादन, सिंचाई, जल आपूर्ति, स्वच्छता तथा संचार जैसी आधारभूत परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देता है। मजबूत आधारभूत संरचना निवेश आकर्षित करती है तथा औद्योगिक एवं कृषि विकास को गति देती है।

3. कृषि एवं ग्रामीण विकास

कृषि विकास के लिए आधुनिक तकनीक, उन्नत बीज, सिंचाई परियोजनाएँ, ग्रामीण सड़कें, कृषि अनुसंधान, भंडारण सुविधाएँ तथा किसानों के लिए ऋण योजनाओं को सहायता प्रदान की जाती है। इससे कृषि उत्पादकता तथा किसानों की आय में वृद्धि होती है।

4. औद्योगिक विकास

IBRD उद्योगों की स्थापना, ऊर्जा उत्पादन, परिवहन सुविधाओं तथा औद्योगिक क्षेत्रों के विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। इससे औद्योगिकीकरण, रोजगार तथा निर्यात में वृद्धि होती है।

5. गरीबी उन्मूलन

विश्व बैंक की अधिकांश योजनाओं का उद्देश्य गरीब वर्ग के जीवन स्तर को सुधारना है। यह ग्रामीण विकास, स्वरोजगार, सामाजिक सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण तथा कौशल विकास कार्यक्रमों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

6. मानव संसाधन विकास

विश्व बैंक शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा कौशल विकास में निवेश करता है। इससे श्रमिकों की कार्यकुशलता बढ़ती है और आर्थिक विकास को गति मिलती है।

7. स्वास्थ्य सेवाओं का विकास

विश्व बैंक अस्पतालों, स्वास्थ्य केन्द्रों, टीकाकरण कार्यक्रमों, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण तथा महामारी नियंत्रण से संबंधित परियोजनाओं को सहायता देता है। स्वस्थ जनसंख्या किसी भी देश के विकास का आधार होती है।

8. शिक्षा का विस्तार

प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के विकास के लिए विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों तथा डिजिटल शिक्षा कार्यक्रमों को सहायता प्रदान की जाती है।

9. पर्यावरण संरक्षण

विश्व बैंक जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, वन संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, जल संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग पर विशेष बल देता है।

10. निजी क्षेत्र का विकास

विश्व बैंक आर्थिक सुधारों तथा निवेश-अनुकूल नीतियों को बढ़ावा देकर निजी उद्योगों एवं उद्यमिता के विकास में सहायता करता है।

11. सुशासन एवं संस्थागत विकास

IBRD सार्वजनिक प्रशासन, कर प्रणाली, वित्तीय प्रबंधन, न्यायिक व्यवस्था तथा सरकारी संस्थाओं की कार्यक्षमता बढ़ाने में तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

12. संकट प्रबंधन एवं पुनर्निर्माण

प्राकृतिक आपदाओं, महामारी, युद्ध एवं आर्थिक संकट के समय विश्व बैंक आपातकालीन ऋण, अनुदान एवं तकनीकी सहायता देकर पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विश्व बैंक (IBRD) के प्रमुख कार्य

1. दीर्घकालीन ऋण प्रदान करना

विकास परियोजनाओं के लिए कम ब्याज दर पर दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध कराना।

2. तकनीकी सहायता

विकास योजनाओं के निर्माण, मूल्यांकन एवं क्रियान्वयन हेतु विशेषज्ञों की सेवाएँ उपलब्ध कराना।

3. अनुसंधान एवं ज्ञान का प्रसार

आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय विषयों पर शोध करना तथा विकास रिपोर्ट प्रकाशित करना।

4. निवेश को प्रोत्साहित करना

घरेलू एवं विदेशी निवेश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने में सहायता करना।

5. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना

परिवहन, संचार तथा व्यापारिक सुविधाओं का विकास कर वैश्विक व्यापार को प्रोत्साहित करना।

6. मानव विकास कार्यक्रम

शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सुरक्षा एवं कौशल विकास कार्यक्रमों को सहयोग देना।

7. वित्तीय स्थिरता

सदस्य देशों को आर्थिक सुधारों, बजट प्रबंधन तथा वित्तीय अनुशासन के लिए सहायता देना।

8. नीति निर्माण में सहयोग

सरकारों को आर्थिक नीतियों, सुधार कार्यक्रमों तथा विकास रणनीतियों के निर्माण में परामर्श देना।

9. क्षमता निर्माण

सरकारी अधिकारियों एवं संस्थानों को प्रशिक्षण देकर उनकी कार्यक्षमता बढ़ाना।

10. सतत विकास को बढ़ावा देना

पर्यावरण संरक्षण, हरित ऊर्जा तथा जलवायु परिवर्तन से संबंधित परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

विकासशील देशों के लिए विश्व बैंक का महत्व

- आर्थिक विकास की गति तेज होती है।
- आधारभूत संरचना का विस्तार होता है।
- रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।
- गरीबी एवं असमानता में कमी आती है।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का विकास होता है।
- कृषि एवं ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिलता है।
- औद्योगिकीकरण और निर्यात में वृद्धि होती है।
- विदेशी निवेश आकर्षित होता है।
- तकनीकी ज्ञान एवं आधुनिक प्रबंधन का विकास होता है।
- सतत एवं समावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है।

विश्व बैंक (IBRD) की आलोचनाएँ

- ऋण के कारण विकासशील देशों पर विदेशी ऋण का बोझ बढ़ जाता है।
- ऋण के साथ कठोर आर्थिक एवं नीतिगत शर्तें लागू की जाती हैं।
- ऋण स्वीकृति की प्रक्रिया जटिल एवं समय लेने वाली होती है।
- कई बार विकसित देशों का प्रभाव निर्णयों पर अधिक माना जाता है।
- कुछ परियोजनाओं से पर्यावरण एवं स्थानीय समुदायों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
- सभी विकासशील देशों को समान लाभ प्राप्त नहीं हो पाता।
- कई बार ऋण का उपयोग प्रभावी ढंग से नहीं हो पाता, जिससे अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते।

भारत में विश्व बैंक (IBRD) का योगदान

- विश्व बैंक ने भारत में अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की है, जैसे–
- राष्ट्रीय राजमार्ग एवं सड़क निर्माण।
- ग्रामीण विकास एवं आजीविका मिशन।
- सिंचाई एवं जल संसाधन परियोजनाएँ।
- शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र का विकास।
- स्वच्छ पेयजल एवं स्वच्छता परियोजनाएँ।
- ऊर्जा एवं नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाएँ।
- शहरी विकास एवं स्मार्ट सिटी कार्यक्रमों में सहयोग।
- डिजिटल विकास एवं प्रशासनिक सुधारों में सहायता।

निष्कर्ष

विश्व बैंक (IBRD) विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक, सामाजिक एवं संस्थागत विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह केवल वित्तीय सहायता ही नहीं देता, बल्कि तकनीकी विशेषज्ञता, नीतिगत मार्गदर्शन तथा क्षमता निर्माण के माध्यम से देशों को आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी बनने में सहायता करता है। आधारभूत संरचना, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, पर्यावरण संरक्षण तथा गरीबी उन्मूलन के क्षेत्रों में इसका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यद्यपि ऋण की शर्तों, बढ़ते ऋण बोझ तथा विकसित देशों के प्रभाव जैसी आलोचनाएँ भी हैं, फिर भी विश्व बैंक वैश्विक विकास प्रक्रिया का एक प्रमुख स्तंभ बना हुआ है और विकासशील देशों के सतत एवं समावेशी विकास में इसकी भूमिका भविष्य में भी महत्वपूर्ण बनी रहेगी।